प्रवाह

अमर उजाला

वाराणसी ■ शुक्रवार, 21 जुलाई 2017

निर्भीक पत्रकारिता का सातवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

यदि आपका काम दूसरों को ज्यादा सपने देखने, सीखने और ज्यादा काम करने के लिए प्रेरित करे, तो आप नेता हैं ...

...जॉन क्विंसी एडम्स

अमूमन राष्ट्रपति चुनाव औपचारिक होता है, मगर मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में जब दलित विमर्श केंद्र में है, रामनाथ कोविंद के निर्वाचन का खास महत्व है। उनका निर्वाचन इस देश के करोड़ों वंचित और उत्पीड़ित परिवारों के लिए प्रेरणा बन सकता है।

नए राष्ट्रपति

रामनाथ कोविंद के नाम की जिस दिन एनडीए ने घोषणा की थी, उसी दिन साफ हो गया था कि वही देश के अगले राष्ट्रपति होंगे, क्योंकि इलेक्टोरल कॉलेज में उनकी स्थिति विपक्ष की उम्मीदवार मीरा कुमार की तुलना में काफी मजबूत थी। इसलिए राष्ट्रपति चुनाव का नतीजा अप्रत्याशित नहीं है, जिसमें उन्हें 66 फीसदी और मीरा कुमार को 34 फीसदी वोट मिले हैं। अमूमन राष्ट्रपति चुनाव बेहद औपचारिक होता है, मगर मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में जब दलित विमर्श केंद्र में है, रामनाथ कोविंद के निर्वाचन का खास महत्व है। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में कोविंद के नाम की घोषणा के बाद कांग्रेस की अगुआई वाले विपक्ष को भी पूर्व लोकसभा अध्यक्ष और दलित नेत्री मीरा कुमार को उम्मीदवार बनाना पड़ा। के आर नारायणन के बाद राष्ट्रपति बनने वाले कोविंद दलित समुदाय के दूसरे व्यक्ति होंगे, जिसे भारतीय लोकतंत्र की एक बड़ी उपलब्धि के तौर पर देखा जा सकता है। वास्तव में कानपुर देहात के परौंख गांव से रायसीना हिल तक का कोविंद का सफर इस देश के करोड़ों वंचित और उत्पीड़ित परिवारों के लिए प्रेरणा बन सकता है। वह दो बार राज्यसभा के सदस्य रहे हैं, कई संसदीय समितियों में भी रहे और सुप्रीम कोर्ट तक में वकालत कर चुके हैं, मगर सादगी और विनम्रता उनकी दो बड़ी पूंजी है, जिसकी झलक निर्वाचन के तुरंत बाद दिए गए उनके संबोधन में नजर आई। कोविंद ने निर्वाचित होने के बाद अपनी पहली टिप्पणी में अपने उस अतीत को याद किया, जब बारिश के ऐसे ही दिनों में उन्हें गांव के अपने कच्चे घर में रिसते पानी से बचने के लिए दीवार के सहारे खड़े रहना पड़ता था! यह अपने आपमें देश के वंचितों और दलितों के लिए बड़ा संदेश है, जिनकी आवाज अन्यथा दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में अनसुनी रह जाती है। यह मामूली बात नहीं है, जब मीडिया और बौद्धिक जगत का एक तबका उनके नाम को अनजाना बताकर खारिज कर रहा था, तब कोविंद विनम्रता के साथ उन्हें सुनते रहे। दूसरी ओर भाजपा और आरएसएस से जुड़े उन लोगों को भी यह समझने की जरूरत है, जो कोविंद के निर्वाचन को एक विचारधारा तक सीमित कर देख रहे हैं, कि उनका इस मुकाम तक पहुंचना संविधान की उसी परंपरा की कड़ी है, जिसकी बुनियाद बाबा साहेब अंबेडकर ने रखी थी।

मिट्टी के घर से रायसीना हिल तक

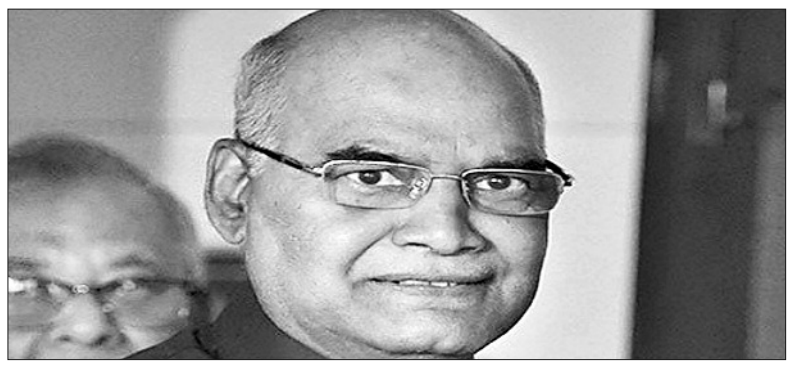

उनके प्रथम संबोधन से यह उम्मीद बनी है कि वह देश के गरीबों के हितों में काम करेंगे और दलगत भावना से ऊपर उठकर इस पद की मर्यादा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाएंगे।

मनीषा प्रियम, राजनीतिक विश्लेषक

उत्तर प्रदेश में जन्मे और सत्तारूढ़ भाजपा के प्रत्याशी रामनाथ कोविंद देश के नए राष्ट्रपति होंगे। राष्ट्रपति पर देश के संविधान के संरक्षण की जिम्मेदारी होती है। वह संविधान, जिसे दलित समुदाय में ही जन्मे बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने अपने बौद्धिक चिंतन से तैयार किया था। रामनाथ कोविंद दलित समुदाय से राष्ट्रपति बनने वाले दूसरे व्यक्ति होंगे, क्योंकि के आर नारायणन दलित समुदाय से आने वाले देश के पहले राष्ट्रपति थे, पर यह पहली बार हुआ कि आजादी के बाद इस पद के लिए हुए चुनाव में दोनों प्रमुख प्रत्याशी दलित समुदाय से ही थे।

वास्तव में भाजपा ने विपक्षी दलों से पहले राष्ट्रपति पद के लिए उनके नाम की घोषणा कर एक बड़ा दांव खेला। भाजपा के इसी दांव के कारण विपक्ष को भी अपना उम्मीदवार दलित समुदाय से चुनने के लिए मजबूर होना पड़ा। भाजपा के राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के पक्ष में बहुमत के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं था, पर इसे कोविंद के व्यक्तित्व की सौम्यता कहें या भाजपा की चुनावी कुशलता कि रामनाथ कोविंद को 66 फीसदी मत मिले। रामनाथ कोविंद की उम्मीदवारी की घोषणा होते ही बिहार के मुख्यमंत्री ने अपने गठबंधन के सहयोगियों का साथ छोड़कर रामनाथ कोविंद को समर्थन देने की घोषणा कर दी।

विपक्षी उम्मीदवार मीरा कुमार और रामनाथ कोविंद, दोनों अनुभवी राजनेता रहे हैं और दोनों की छवि मृदुभाषी नेता की रही है। मीरा कुमार बाबू जगजीवन राम की बेटी के तौर पर राजनीति में आईं और लोकसभा अध्यक्ष के गरिमापूर्ण पद पर भी आसीन रही हैं। इधर रामनाथ कोविंद ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता के रूप में की और भाजपा में विभिन्न पदों पर रहते हुए राज्यपाल जैसे सांविधानिक पद की जिम्मेदारी भी संभाली। बिहार का राज्यपाल रहते हुए ही भाजपा ने उन्हें राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया था।

इससे पहले एपीजे अब्दुल कलाम भाजपा के प्रत्याशी के रूप में राष्ट्रपति जरूर बने थे, पर उनकी पहचान एक वैज्ञानिक के तौर पर ही थी। उपराष्ट्रपति के उम्मीदवार वेंकैया नायडू की जीत की भी प्रबल संभावना है। ऐसे में भाजपा के लिए यह खुशी का क्षण तो है ही, पर शीर्ष सांविधानिक पद पर आसीन होने वाले रामनाथ कोविंद के सामने एक बड़ी चुनौती यह है कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस शीर्ष सांविधानिक पद की गरिमा का निर्वहन वह कैसे करते हैं।

उनके सामने घरेलू चुनौतियां तो हैं ही, बाहरी चुनौतियां भी हैं। नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली राजग सरकार ने भारत की विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन किया है। अमेरिका और इस्राइल के साथ जहां भारत के संबंध पहले से मजबूत हुए हैं, वहीं पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसी देशों के साथ रिश्ते में तल्खी आई है। हाल ही में हमने देखा कि दोकलम मामले पर भारत दृढ़ता के साथ अपनी बात पर अड़ा हुआ है। भले चीन की सैन्य शक्ति भारत से मजबूत है, फिर भी भारत का चीन की आंख में आंख डालकर बात करने और पाकिस्तान जैसे जिद्दी देश को सबक सिखाने जैसे मामले भारत की सैन्य शक्ति से जुड़े हैं। रामनाथ कोविंद राष्ट्रपति के रूप में देश की तीनों सेनाओं के घटकों के पदेन कमांडर इन चीफ भी होंगे। भारत की इस नई और अग्रसर सैन्य नीति पर उनका क्या रुख रहता है, आने वाले दिनों में यह देखने वाली बात होगी।

यदि घरेलू मोर्चे की चुनौतियों की चर्चा करें, तो सबसे पहली बात तो यही देखने वाली होगी कि अतीत में भाजपा से जुड़े रहने के बावजूद क्या वह विपक्षी दलों के शिष्टमंडल के साथ निष्पक्षता से उनकी बात पर गौर करेंगे। संसद के निर्वहन में यदि सरकार राज्यसभा की चुनौतियों को देखते हुए संयुक्त सत्र का सहारा लेती है, तो उनकी कैसी प्रतिक्रिया होगी। वह अपने ही दल की सरकार को नसीहत दे पाएंगे या अपनी सरकार के साथ निष्पक्षता से पेश आएंगे, यह सब आने वाले दिनों में पता चलेगा। इन दिनों देश के विभिन्न हिस्सों में गोरक्षा के नाम पर भय का माहौल बना है। इस माहौल का प्रधानमंत्री और निवर्तमान राष्ट्रपति ने भी विरोध किया है और विपक्षी दलों के तेवर भी इस मुद्दे पर सख्त हैं। इस मुद्दे पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी, इस पर मीडिया और देश की नजरें टिकी रहेंगी। कई बार ऐसी दलील दी जाती है कि कानून-व्यवस्था राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है। इसलिए कई बार सांप्रदायिक दंगे काबू में नहीं आ पाते, क्योंकि राज्य सरकारें उन पर अंकुश लगाने में अक्षम रहती हैं। लेकिन राष्ट्रपति की हैसियत से उनकी नसीहत तो राज्यों को भी दी जा सकती है। क्या वह ऐसी नसीहत राज्यों को दे पाएंगे? निवर्तमान राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रखर भूमिका निभाई है। वह विश्वविद्यालयों से बातचीत करते रहे हैं, राष्ट्रपति भवन में लेखकों का जमावड़ा भी हुआ है। ऐसे में इनसे भी यह अपेक्षा रहेगी कि वह विश्वविद्यालयों को राजनीति से अलग रखें। उनकी सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर वह देश के नागरिकों के लोकप्रिय नेता बन पाएंगे या नहीं।

हालांकि इस पद पर चुने जाने के बाद दी गई उनकी पहली प्रतिक्रिया बहुत ही भावुक और प्रभावी थी। अपने संक्षिप्त बयान में उन्होंने कहा कि मैं गरीबी के बीच से उठकर आज देश के सबसे शीर्ष पद पर पहुंचा हूं। बचपन में हमारा घर मिट्टी का था और जब भी बारिश होती थी, तो हम लोग यही मनाते थे कि कब बारिश बंद हो जाए। आज भी देश में करोड़ों रामनाथ कोविंद (गरीब) हैं, जो कहीं खेतों में काम कर रहे होंगे, रात के खाने के लिए पसीना बहा रहे होंगे, उन सबको मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि मैं राष्ट्रपति भवन में भी उन्हीं लोगों का प्रतिनिधि बनकर रहूंगा। *सर्वे भवन्तु सुखिनः* के भाव से मैं राष्ट्र की सेवा करता रहूंगा। उनके इस प्रथम संबोधन से यह उम्मीद बलवती हुई है कि वह देश के गरीबों के हित में काम करेंगे और दलगत भावना से ऊपर उठकर इस सांविधानिक पद की मर्यादा को नई ऊंचाई तक पहुंचाएंगे।

लोकतंत्र सुधार के लिए जनमत तैयार करने की कला है

अंतर्ध्वनि

फिलिप नोएल-बाकेर

आज हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, हथियारों की होड़ बहुत तेजी से बढ़ गई है। लेकिन आज हर देश के नागरिकों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि हथियारों के इस होड़ की प्रकृति क्या है। सबसे पहले तो यह हमारे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। दूसरा, यह मानव इतिहास की सबसे बड़ी विडंबना है कि हर नया हथियार राष्ट्र की रक्षा के नाम पर तैयार होता है। लेकिन सभी विशेषज्ञ इससे सहमत हैं कि आधुनिक जनसंहारक हथियारों ने रक्षा नष्ट की है। तीसरा, हथियारों की यह होड़ बढ़ती रही, तो पता नहीं भविष्य में कितने सैन्य दिग्गज होंगे। चौथा, उन्नत हथियारों ने हमें पहले से कहीं ज्यादा अप्रत्याशित, निर्णायक और अपरिवर्तनीय झटके के भीतर ला दिया है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा था, एक बड़ी बुराई के खिलाफ छोटा-सा उपाय कोई नतीजा नहीं देता, यह पूरी तरह विफल हो जाता है। इसलिए पूर्ण निरस्त्रीकरण संधि के बजाय नए परमाणु हथियारों में कटौती मेरी नजर में विफल ही होंगे। निरस्त्रीकरण हर राष्ट्र की रक्षा के लिए सबसे सुरक्षित और व्यावहारिक प्रणाली है। जब मनुष्यों ने चंद्रमा तक पहुंच बना ली, बीमारियों पर विजय प्राप्त कर ली, तो क्या निरस्त्रीकरण इतना मुश्किल है कि यह असंभव स्वप्न बन जाए? कहा जाता है कि राजनीति संभवनाओं की कला है। लोकतंत्र सुधार के लिए जनमत तैयार करने की कला है। और निरस्त्रीकरण तकनीकी रूप से राष्ट्रीय रक्षा का सबसे सरल उपाय है।

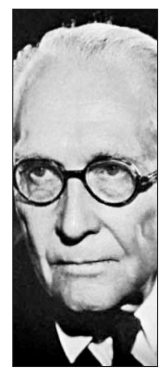

-नोबेलजयी ब्रिटिश राजनेता

मंजिलें और भी हैं

>> क्लेमेंटाइन चैंबन

सात समंदर पार से आकर गांव में रोशनी फैलाई

वैसे तो मैं मूलतः ब्रिटेन की हूं, पर मैंने उत्तर प्रदेश के एक पिछड़े जिले बहराइच के गांव सरवनतारा को अपनी कर्मभूमि बनाया है। मैं लंदन के इंपीरियल कॉलेज के रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग की पीएच.डी. शोधार्थी हूं। मैंने प्रतिष्ठित कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से बायोमास पावर में मास्टर्स डिग्री भी हासिल की है। कैम्ब्रिज के ही अपने भारतीय साथी अमित रस्तोगी की मदद से मैं यहां तक पहुंची हूं। दो साल पहले हमने अपने सामाजिक उद्यम 'ऊर्जा' की शुरुआत की थी। वैसे तो भारत में काम करने की मेरी खास वजह तो नहीं थी, पर जब मैं इस ऐतिहासिक राज्य की राजधानी लखनऊ से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दूर इस गांव से वाकिफ हुई, तो हैरान रह गई। मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था कि किसी गांव में बिजली तक न पहुंची हो। इस गांव में स्थानीय परिभाषा के हिसाब से निम्न जाति के लोग रहते हैं। ये लोग अपना मोबाइल फोन चार्ज करने के लिए भी दूसरे गांव, जहां बिजली की सुविधा है या अपने ब्लॉक-तहसील मुख्यालय जाते थे। लोगों की ऐसी परेशानी देख मेरे सामने यहां प्रोजेक्ट शुरू न करने की कोई वजह नहीं थी। इसके बाद मैंने 'ऊर्जा' के माध्यम से गांव में सोलर पावर की उपलब्धता सुनिश्चित करने में जुट गई। अपने इंजीनियरिंग के कौशल का प्रयोग करते हुए मैंने सोलर पावर प्लांट डिजाइन किया।

मैंने गांव में मिनी सोलर ग्रिड स्थापित कर लगभग एक हजार लोगों तक बिजली पहुंचाई है।

मेरी परियोजना में यह सुनिश्चित किया गया कि गांव के हर व्यक्ति को बेहद कम खर्च में आसानी से बिजली मुहैया कराई जा सके। मैं अपनी योजना में सफल हुई और कुछ ही समय पहले मैंने गांव में मिनी सोलर ग्रिड स्थापित कर लगभग एक हजार लोगों तक बिजली पहुंचाई है। मैं अपनी टीम के साथ ग्रामीणों के चेहरे पर खुशी देखकर बहुत अच्छा महसूस करती हूं। गांव के बच्चों को पढ़ने के लिए अब बिजली मिल रही है। उम्मीद है कि स्कूल में एक कंप्यूटर सेंटर भी खुल जाएगा। साथ ही लोगों को मोबाइल चार्ज करने के लिए दूसरे गांव नहीं जाना पड़ेगा। हमारे संयंत्र में चार किलोवाट आवासीय बिजली और सिंचाई पंपों के लिए चार किलोवाट बिजली अलग उत्पादित होती है। हमने गांव के परिवारों को एलईडी बल्ब, मोबाइल चार्जर और पंखे प्रदान किए हैं। इन सारे उपकरणों को चलाने के खर्चे के लिए हमने गांव वालों की सहमति से 130 रुपये प्रतिमाह का सहयोग शुल्क तय किया है। मैं मानती हूं कि भारत में ऊर्जा की खपत पूरी करना आसान नहीं है। इसके लिए सोलर पावर प्लांट की बड़े पैमाने पर जरूरत होगी। आने वाले समय में डीजल के दामों में वृद्धि ही होगी, इसलिए सोलर पैनल के जरिये बिजली बनाना काफी सस्ता और वैकल्पिक होगा। मैं आने वाले समय में ऐसे ही कुछ और गांवों में सोलर पावर प्लांट स्थापित करूंगी। मेरी 'ऊर्जा' टीम अगले साल तक इसी तरह के कई मिनी ग्रिड स्थापित करने के लिए फंड जुटा रही है। मैंने इस प्रोजेक्ट के तहत सोलर प्लांट लगाने के बाद हर घर में स्मार्ट मीटर लगाया है, जिससे रियल टाइम बिजली की खपत मापी जाती है। खपत की इस माप के आधार पर हम अपनी सेवाएं भविष्य में और बेहतर करेंगे। मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकती हूं कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर काम करके भारत के पिछड़े समाज में सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरण से जुड़ा बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

उनके श्रम का सम्मान

कामवालियों के श्रम का महत्व उनसे काम लेने वाली महिलाएं नहीं समझतीं, जबकि उन्हीं के कारण वे अपना काम कर पाती हैं। कामगार दिवस के कुछ ही दिन बाद नोएडा के एक अपार्टमेंट के लोगों ने पड़ोस की कामवालियों की झुग्गियां ध्वस्त करवा दीं।

सुभाषिनी सहगल अली

दुनिया भर में 16 जून घरेलू कामगार दिवस के रूप में मनाया जाता है। जो औरतें दूसरों के घरों में काम करती हैं, वे शायद ही अपने इस काम की खुशी मनाती होंगी। उनसे काम लेने वाली महिलाएं भी खुशी कम मनाती हैं, शिकायतें ज्यादा करती है। 'देर से आती है', 'काम कम करती है, चाय ज्यादा पीती है', 'जब जी चाहता है, छुट्टी कर लेती है' जैसी बातें ही इन महिलाओं से सुनने को मिलती हैं।

काम करने वाली महिलाओं को शायद ही पता हो कि साल का एक दिन उनके नाम कर दिया गया है। यह दिन दूसरों के घरों में काम करने वाली इन महिलाओं के अधिकारों की याद दिलाने के लिए तय किया गया है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन ने इस काम में लगी महिलाओं के लिए बहुत सारे अधिकार तय किए हैं। हमारी सरकार ने इसके अनुरूप कुछ कानून भी बनाए हैं। पर देश की परिस्थितियां ऐसी है कि इनको लागू करने का काम कहीं दिखाई नहीं देता।

काम करने वाली और काम लेने वाली, दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं। अच्छी तनख्वाह पाने वाली, बड़े पदों पर बैठीं, अभिनेत्रियां, शिक्षिकाएं, डॉक्टर, वकील-सबको नाज है कि अपनी प्रतिभा, मेहनत और काबिलियत के कारण वे शिखर पर हैं। पर वे भूल जाती हैं कि उनके वहां बने रहने में कामवालियों का कितना योगदान है। इसका पता तब चलता है, जब कामवाली काम पर नहीं आती। इस निर्भरता का नतीजा तो यह होना चाहिए कि कामवाली के श्रम का सम्मान हो। चूंकि दोनों एक दूसरे की पूरक हैं, अतः दोनों को एक दूसरे के बराबर होने का एहसास होना चाहिए। पर ऐसा होता नहीं है।

हमारे समाज में शारीरिक श्रम करने वालों की अवहेलना की जाती है। कामवाली गरीब भी होती हैं और सामाजिक रूप से उपेक्षित भी। जबकि वह बच्चे खिलाती हैं, कप-प्लेट धोती हैं, कपड़े साफ करती हैं, पोछा लगाती है। उसे मजदूरी भी कम मिलती है और बहुत सारे घरों में यह मजदूरी पाने के लिए भी उसे जद्दोजहद करनी पड़ती है। चोरी का इल्जाम उस पर बहुत जल्दी लग जाता है, अक्सर मजदूरी मांगने पर भी लग जाता है।

कुछ दिन पहले नोएडा के एक आलीशान अपार्टमेंट में भारी बवाल मचा। एक कामवाली काम के बाद घर नहीं लौटी। उसका पति रात में उसका पता लगाने गया, तो मालकिन ने बता दिया कि वह तो चली गई। दूसरे दिन तड़के जब उस बिल्डिंग के सामने भीड़ जमा हो गई, तो सिक्युरिटी गार्ड उस औरत को बेहोशी की हालत में उठाकर बाहर ले आए। उसे देख लोग उत्तेजित हो गए और उन्होंने मालकिन के फ्लैट में घुसकर तोड़फोड़ की। कामवाली का कहना है कि उसे दो महीने से तनख्वाह नहीं मिली, मांगने पर उसे बुरी तरह मारा गया। मालकिन का कहना है कि उसने चोरी की। उसने चोरी की, तो पुलिस के हवाले क्यों नहीं किया? फिर कहा गया कि कामवाली मुस्लिम है, बांग्लादेशी है। पुलिस के वरिष्ठ अधीक्षक ने कहा कि वह बांग्लादेशी नहीं है और मामले की जांच होगी।

फिर मालिक-मालकिन से मिलने केंद्रीय मंत्री महेश शर्मा पहुंचे। उन्होंने कहा कि वह उनकी पूरी मदद करेंगे। कुछ ही घंटों में कामवालियों की झुग्गियों से कुछ पुरुषों को पकड़कर जेल भेज दिया गया। उनके खिलाफ मुकदमे ठोक दिए गए। दूसरे दिन तमाम झुग्गियां तहस-नहस कर दी गईं। उन झुग्गियों में रहने वाले लोगों ने ही वह बिल्डिंग बनाई थी, जिनमे बसने वालों ने इन मजदूरों का बसेरा बर्बाद कर दिया। यह सब 'कामगार दिवस' के कुछ ही दिन बाद हुआ।

खुली खिड़की

सबसे कम जन्म दर

भारत की बढ़ती जनसंख्या और अधिक जन्म दर देश की अनेक समस्याओं का कारण बनती जा रही है। वहीं दुनिया में कुछ ऐसे भी देश हैं, जहां की जन्म दर बेहद धीमी है। इस सूची में मोनाको शीर्ष पर है।

दुनिया में निम्नतम जन्म दर वाले देश

आंकड़े- प्रति एक हजार व्यक्तियों पर होने वाले जन्म

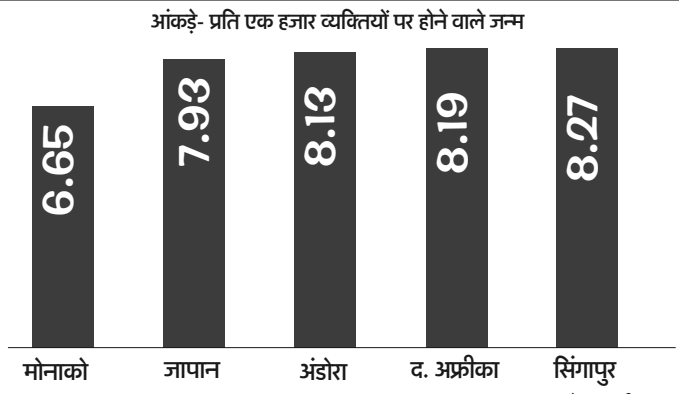

स्रोत- वर्ल्ड एटलस

स्थिर हो गया अंगुलिमाल

तथागत की अनुपस्थिति में सारिपुत्र ने ही भिक्षु संघ को समाचार सुनाया था कि भिक्षु अंगुलिमाल नहीं रहे। यह सुन कइयों ने आश्वस्ति की सांस ली, क्योंकि अंगुलिमाल के भिक्षु संघ में रहने से वे स्वयं को असुरक्षित महसूस करते थे। उन्हें लगता था कि अंगुलिमाल पता नहीं, कब अपनी आदत दोहरा बैठे।

भिक्षु संघ के कुछ सदस्यों ने सारिपुत्र से कहा कि वह अंगुलिमाल के भिक्षु बनने की गाथा सुनाएं। सारिपुत्र बोले, अंगुलिमाल हत्यारा था। उसने शपथ ली थी कि हजार लोगों को मारकर उनकी उंगलियों की माला पहनेगा। जिस समय तथागत उससे मिले, वह नौ सौ निन्यानबे व्यक्तियों को मार चुका था। भगवान उस दिन उस भयानक वन की ओर चल दिए। किसी के आने की आहट पा अंगुलिमाल ने अपने फरसे को धार देनी शुरू की। उसने खड़े होकर गौर से देखा, गैरिक वस्त्र, हाथ में कमंडल लिए कोई बेचारा संन्यासी चला आ रहा है। पर जैसे-जैसे भगवान उसके समीप बढ़ते गए, वैसे-वैसे उसके अंतःकरण के भाव बदलने लगे। जब तथागत थोड़ी दूर रह गए, तो अंगुलिमाल चिल्लाया, पागल संन्यासी। तू किधर बढ़ा चला जा रहा है? क्या तूने मेरे प्रण की बात नहीं सूनी? मैं नौ सौ निन्यानबे को मार चुका हूं। एक को मारना बाकी है। भगवान हंसते हुए बोले, अरे पागल, सालों पहले मैंने चलना बंद कर दिया है। जब से मेरा मन ठहरा, मेरी सारी भागदौड़ भी बंद हो गई है। मैं तो स्थिर हूं, अब तू स्थिर हो। इन बोधपूर्ण वचनों को अंगुलिमाल समझ न सका, पर बुद्ध की ऊर्जा ने उसे स्थिर कर दिया।

सत्संग

-ओशो

हरियाली और रास्ता

मनन, बस और वह लड़का

मनन की कहानी, जिसे एक मूक लड़के ने संवेदनशील होने के बारे में बताया।

मनन घर में घुसा ही था कि उसकी पत्नी की नजर उस पर पड़ी। वह बोली, क्या बात है? आज तुम इतने गुमसुम क्यों हो? दुखी मनन बोला, जिंदगी भी कितनी अजीब है। यह कोई नहीं बता सकता कि किसके जीवन में क्या चल रहा है। पत्नी बोली, अरे, आज ऐसा क्या हो गया तुम्हें कि ऐसी बातें कर रहे हो? मनन बोला, मैंने कल एक लड़के के बारे में बताया था, क्या तुम्हें याद है? पत्नी बोली, हां, याद क्यों न होगा। वही

न, जो बार-बार तुम्हें परेशान कर रहा था? मनन बोला, हां वही, लेकिन वह शायद मुझे परेशान नहीं कर रहा था। वह मुझसे कुछ कहना चाहता था। पत्नी बोली, लेकिन तुम्हीं ने तो बताया था कि वह तुम्हें बार-बार खड़े होने का इशारा कर रहा था। मनन बोला, हां, वह मुझे इशारा तो कर रहा था। लेकिन उसका मकसद मुझे परेशान करना कतई नहीं था। पत्नी बोली, लेकिन यह बात तुम्हें आज कैसे समझ में आई? मनन बोला, आज मैं उसी बस से दोबारा वापस आया। उस बस की जिस सीट पर मैं कल बैठा हुआ था, उसे हटा दिया गया था। पत्नी ने पूछा, ऐसा क्यों? मनन बोला, कल उस बस में किसी के साथ हादसा हो गया था। उस सीट की गद्दी खराब थी, और उसके नीचे से एक बड़ी-सी कील निकल रही थी। एक आदमी जब उस पर बैठा, तो वह कील उसके पैर में घुस गई। जब तक उसे अस्पताल पहुंचाते, तब तक उसके पूरे पैर में जहर फैल गया, जिसकी वजह से उसका वह पैर काटना पड़ा। पत्नी ने पूछा, पर तुम भी तो कल उसी सीट पर बैठे थे। मनन बोला, हां, इसीलिए वह लड़का बार-बार मेरी शर्ट खींचकर मुझे वहां से उठने के लिए कह रहा था। वह गूंगा था और उसे पता चल गया था कि सीट के नीचे कील है। लेकिन मेरी वजह से उसे उस बस से उतार दिया गया। मैं समझ ही नहीं पाया कि वह मेरा ही भला चाह रहा था। वह आज बस के पास मेरा इंतजार कर रहा था। वह सिर्फ यह देखने के लिए आया था कि मुझे कुछ हुआ तो नहीं।

हम जिसे अपना दुश्मन समझते हैं, वह हमारा दोस्त भी हो सकता है।